Introduction

प्राक्कथन

भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति विभिन्न कालों में और विभिन्न समाजों में भिन्न–भिन्न प्रकार की रही है। वैदिक काल में उसे शक्ति, ज्ञान एवं संपत्ति के प्रतीक के रुप में क्रमशः दुर्गा, सरस्वती एवं लक्ष्मी के रुप में माना गया। उत्तर वैदिक काल में भी समाज में उनका समुचित आदर एवं स्थान था, साथ ही उन्हें धार्मिक एवं वैवाहिक जीवन में काफी स्वतंत्रता थी। उत्तर वैदिक काल के अंतिम वर्षों से स्त्रियों की स्थिति में अवनति प्रारंभ हो गयी। मनुस्मृति में सर्वप्रथम स्त्रियों की स्वतंत्रता पर अनेक प्रकार के प्रतिबंध लगाये गये। धर्मशास्त्रों के काल में स्त्रियों की स्थिति निम्न से निम्नतर होती गई। इस काल में वे नितांत परतंत्र एवं निःसहाय समझी जाने लगीं। अनमेल विवाह, बहुपत्नीत्व प्रथा, अशिक्षा आदि संकीर्णताएँ इस युग में प्रवेश पा चुकी थीं। मध्यकाल में धर्म के नाम पर स्त्रियों का सबसे ज्यादा शोषण हुआ। पर्दाप्रथा, विधवाओं के पुर्नविवाहों पर प्रतिबंध, सतीप्रथा, बालविवाह का प्रचलन, बहुपत्नी विवाह जैसी निर्योग्यताएँ स्त्रियों पर थोपी गयीं। आधुनिक काल में अंग्रेजों के आगमन के कारण धर्म एवं समाज की रक्षा हेतु धार्मिक, सामाजिक कुछ आंदोलन हुए जिसके कारण स्त्रियों की स्थिति में कुछ सुधार हुए। ऐसे समाज सुधारक महानुभावों में राजा राममोहन, केशवचंद्र सेन, दयानंद सरस्वती आदि मुख्य हैं। बाद में ज्योतिबा फूले, महात्मा गांधी तथा डॉ. बी. आर.आंबेडकर आदि भी इस क्षेत्र में आये।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है, कि सदियों से पुरुष प्रधान समाज ने स्त्रियों को परजीवी बना रखा है। आज जब नारी मुक्ति एवं समाजवादी, साम्यवादी आंदोलन के द्वारा उन्हें बराबरी का कानूनी दर्जा दे दिया गया है, जिससे वे काफी आगे बढी हैं, तो भी ये शिक्षित स्त्रियाँ वस्तु बनकर पुरुषों के शोषण का शिकार हो रही हैं। शिक्षित सवर्ण स्त्रियों की स्थिति से भी अधिक दयनीय स्थिति दलित स्त्रियों की है। सवर्ण और दलित स्त्रियों की कुछ समस्याएँ जरुर सांझी हैं, जैसे परिवार द्वारा उसकी अवहेलना, उस पर बरती जानेवाली हिंसा या यौन शोषण, लेकिन दलित स्त्री होने के नाते उसकी समस्याएँ जातीय हो जाती है और वह स्त्री के खेमे से हट कर जाति के खेमे मान ली जाती है। दलित स्त्री तिहरे शोषण का अभिशाप झेलती है। सवर्ण और संपन्न समाज का अत्याचार वह स्त्री होने के नाते सवर्ण और संपन्न समाज के साथ–साथ अपने ही समाज के दलित पुरुषों की हिंसा, शोषण और बलात्कार का शिकार भी होती है। समाज की नज़र मे और स्वयं नारियों की नजर में भी दलित नारी मनुष्य नहीं एक वस्तु मानी जाती है, जो सबके उपयोग के लिए बनी है। ऐसी ही दलित स्त्रियों के प्रश्नों, उनकी समस्याओं, वेदनामय जीवन, आत्मपीडा, आकांक्षाओं आदि का अध्ययन ही मेरे इस शोध–प्रबंध का विषय है।

विद्यार्थी के लिए गुरु उनका आदर्श होते हैं, मेरे विद्यार्थी जीवन में भी शिक्षा के प्रति मेरी गंभीरता के कारण गुरुजनों का सदैव प्रेम एवं प्रोत्साहन मिला। एच. एस.सी में विनियन शाखा में स्कूल में प्रथम आने पर मेरा उत्साह शिक्षा के प्रति और अधिक बढ गया। गुजरात युनि. संलग्न नवजीवन आर्ट्स एण्ड कोमर्स कॉलेज, दाहोद के कला संकाय में प्रवेश लेकर हिन्दी विषय के साथ स्नातक की परीक्षा में संपूर्ण हिन्दी विभाग में प्रथम आने के उपलक्ष्य में पुरस्कार से सम्मानित किया गया। मेरे परिश्रम एवं लगन को देखते हुए मेरे परिवार ने मुझे अनुस्नातक की उपाधि प्राप्त करने हेतु गुजरात युनि. अहमदाबाद के भाषा भवन में प्रवेश दिलाया। अहमदाबाद में युनि. होस्टल में रहकर

एवं आदरणीय डॉ.रंजना अरगडे, डॉ. आलोक गुप्त, डॉ.रधुवीर चौधरी, स्व. भोलाभाई पटेल आदि से शिक्षा प्राप्त करके हिन्दी साहित्य के प्रति मेरी रुचि में अधिक गंभीरता आने लगी। परिणामस्वरुप अनुस्नातक की परीक्षा में वर्ष 2001 में मैंने गुजरात युनिवर्सिटी में प्रथम स्थान प्राप्त करके उस समय के राज्यपाल श्री सुंदरसींग भण्डारी के हाथों से तीन स्वर्ण पदक प्राप्त किए। इसी उपलक्ष्य में मुझे गुजरात प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, अहमदाबाद की ओर से भी सम्मानित किया गया। एम.ए. के दूसरे वर्ष में एक पेपर के रुप में डॉ.आलोक गुप्त, के निर्देशन में ''दीप्ति खण्डेलवाल के उपन्यास **'कोहरे'** और **'प्रतिध्वनियाँ'** का अध्ययन'' विषय पर लधु शोध प्रबंध लिखा।

एम.फिल. में प्रवेश लेकर डॉ.आलोक गुप्त के निर्देशन में ''कलाकार एवं सत्ता के संबंध के परिप्रेक्ष्य में **'आषाढ़ का एक दिन'**, **'आँठवा सर्ग'** और **'हानूश'** नाटक का अध्ययन'' विषय पर शोध प्रबंध लिखा। इस तरह हिन्दी साहित्य की विधाओं में से उपन्यासों एवं नाटकों पर मैं अपना शोध प्रबंध प्रस्तुत कर चुकी थी। बचपन से ही मेरी रुचि कहानियों के प्रति अधिक थी। इसलिए मैंने पी.एच.डी. में विषय के तौर पर कहानियों का चयन किया। बाल्यकाल से ही मुझे ऐसी कहानियाँ पसंद आती थीं, जो मनोरंजन मात्र न होकर संदेश प्रधान, समस्या प्रधान, मानवीय संवेदनाओं से जुड़ी हुई, यथार्थवादी हुआ करती थीं। प्रेमचंद की यथार्थवादी कहानियाँ मेरे हृदय को सदैव स्पर्श करती थीं जैसे– **'पूस की रात'**, **'कफ़न'**, **'घाँसवाली'**,**ठाकुर का कुआँ, 'सद्गति'**, आदि कहानियों में वर्णित पात्रों की दयनीय स्थिति, विवशता, पीड़ा मेरी अंर्तआत्मा को उनकी सहायता करने के लिए एवं उन्हें न्याय दिलाने के लिए विवश करती थी। उस समय मैं नहीं जानती थी, कि मैं एक साधारण व्यक्ति आखिर दलितों के लिए सहायक किस रुप में बन सकती हूँ।

गुजरात युनिवर्सिटी में अध्ययन करने के कारण अन्य किसी भी युनिवर्सिटी से मेरा कोई संपर्क नहीं हुआ, किन्तु यह मेरी किस्मत थी, कि एम.एस. युनि. के गुजराती विभाग के प्राध्यापक डॉ.कान्ति मालसतर ने पी.एच.डी. करने की मेरी तीव्र महत्त्वाकांक्षा को पहचाना एवं अपने परम मित्र आदरणीय डॉ.अज़हर ढेरीवाला जी से मेरा परिचय करवाया। पी.एच.डी. के लिए जैसे गुरु की कल्पना मैंने की थी, वैसे गुरु मुझे डॉ.अज़हर ढेरीवाला के रुप में सही वक्त पर मिल गए। मेरी गुरु की खोज खत्म हो गई, किन्तु अब पी.एच.डी. के विषय चुनाव के लिए मनो मंथन शुरु होने लगा। तब डॉ.कान्ति मालसतर एवं डॉ.अज़हर ढेरीवाला से विचार–विमर्श करने के पश्चात् मेरा पी.एच.डी. शोध प्रबंध का विषय **''हिन्दी और गुजराती की दलित कहानियों में नारी संवेदना का तुलनात्मक अध्ययन''** निश्चित कर लिया। अध्ययन की सुविधा के लिए सन् 1980 से लेकर 2008 तक की समय–सीमा को भी निर्धारित किया गया।

विषय–चुनाव के उपरांत उन्होंने हिन्दी और गुजराती कथा साहित्य से सम्बद्ध कुछ ग्रंथों को देख जाने के लिए कहा, जिनमें 'दलित विमर्श की भूमिका' (कँवल भारती), 'दलित साहित्य दशा और दिशा' (माता प्रसाद), 'शोषित समाज की दशा और दिशा : समग्र मूल्यांकन' (सं. डॉ.आर.एम.एस.विजयी), 'शुद्रों का प्राचीन इतिहास' (रामशरण शर्मा), 'भारतीय समाज क्रान्ति के जनक महात्मा ज्योतिबा फुले' (डॉ.मु.ब.शहा), आदि। तत्पश्चात् उक्त विषय को लेकर पी.एच.डी. उपाधि के लिए पंजीकरण हो गया।

दलित साहित्य से मेरा विषय जुड़ा हुआ है, अतः दलित साहित्य किसे कहते हैं ? उसका उद्‌भव, विकास, आदि अध्ययन अति आवश्यक था, इसलिए हिन्दी और गुजराती के ग्रंथों का अध्ययन करना भी आवश्यक था। अतः 'हिन्दी साहित्य में

दलित अस्मिता' (डॉ.कालीचरण स्नेही), 'दलित नारी एक विमर्श' (सं.ज्ञानेन्द्र रावत), 'दलित चेतना साहित्यिक एवं सामाजिक सरोकार' (रमणिका गुप्ता), 'दलित चेतना की कहानियाँ बदलती परिभाषाएँ' (राजमणि शर्मा), 'दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र' (ओमप्रकाश वाल्मीकि), 'समकालीन दलित साहित्य एक अध्ययन' (डॉ.जीतूभाई मकवाणा), 'गुजराती साहित्य में दलित कलम' (सं.रमणिका गुप्ता), 'आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध रुपों का चित्रण' (डॉ.मोहम्मद अज़हर ढेरीवाला), 'दलित कथाविमर्श' (डॉ. कान्ति मालसतर), 'दलित चिन्तन का विकास' (डॉ.धर्मवीर) आदि।

मैंने जब से दलित महिलाओं के जीवन एवं उनकी समस्याओं का गहन एवं सूक्ष्म अध्ययन किया है, तब से एक प्रश्न मेरे अंर्तमन में बार–बार उठता रहा, कि आखिर दलित नारी आज़ादी के 65 वर्ष के बाद भी सामाजिक–आर्थिक एवं शैक्षिक रुप से अति पिछड़ी क्यों हैं ? जीवन में तिरस्कार, अपमान, घृणा, गुलामी और बंधन की जंजीरों में कब तक बंधी रहेंगी ? भारत में दलित नारी का इतिहास क्या था ? और वर्तमान में उनकी क्या स्थिति है ? आदि प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए मैंने कई ग्रंथों के अध्ययन द्वारा दलितों एवं दलित नारी की नाना स्थितियों पर चिंतन–विमर्श किया। समानान्तर सन् 1980 से सन् 2008 तक के अट्ठाइस वर्षों की कहानियों का चयन एवं अध्ययन भी जारी था। जैसे–जैसे दलित कहानियों का गहराई से अध्ययन एवं चिंतन किया वैसे–वैसे इस तथ्य से मैं अवगत होती गई, कि हमारे समाज में स्त्री और उसमें भी दलित स्त्री की स्थिति काफी दयनीय है। दलित नारियाँ दोहरी दलित हैं, इस तथ्य को झुठलाया नहीं जा सकता। अस्पृश्यता, भेदभाव, छुआछूत, ऊँच–नीच आदि को मैंने अपने जीवन में कभी नहीं महसूस किया था, किन्तु इन कहानियों का अध्ययन करते हुए मैं उन सभी अनुभवों से स्वयं गुजरी जो कहानी के पात्रों के जीवन में घटित हुए। इसके पश्चात् ही मैं स्वयं को उन दलित नारियों की संवेदना को प्रस्तुत करने योग्य बन पायी। अपने अध्ययन की सुविधा तथा शोध–प्रबंध की समुचित नियोजना हेतु इसे निम्नलिखित छः अध्यायों में विभक्त किया है:–

1.– भूमिका।
2.– हिन्दी की दलित कहानियों में नारी संवेदना।
3.– गुजराती की दलित कहानियों में नारी संवेदना।
4.– हिन्दी और गुजराती की दलित कहानियों में नारी संवेदना का तुलनात्मक अध्ययन।
5.– विशेष नारी पात्र।
6.– उपसंहार।

प्रथम अध्याय भूमिका का है, जिसे पाँच उपविभागों में विभक्त किया गया है। 'दलित' कथा साहित्य से मेरा विषय जुड़ा होने के कारण इस शब्द का शाब्दिक अर्थ, लक्षणार्थ तथा संस्कृत, हिन्दी, गुजराती, मराठी और अंग्रेजी शब्दकोशों में प्रस्तुत किये गये अर्थ की संक्षिप्त चर्चा यहाँ की गई है। दलित साहित्य का क्या अर्थ है ? इस विषय पर संक्षेप में चर्चा की गई है। तदुपरांत दलित साहित्य लिखने का प्रयोजन क्या है ? इस विषय पर संक्षिप्त रुप में प्रकाश डाला गया है। साथ ही हिन्दी और गुजराती दलित साहित्य का उद्‌भव और विकास किस तरह हुआ एवं अन्य साहित्य की तरह आज दलित साहित्य का साहित्य में क्या स्थान है ? इसकी चर्चा करने के पश्चात्

दलित साहित्य का अपना सौन्दर्यशास्त्र क्या है ? कलावादी साहित्य के सौन्दर्यशास्त्र से वह किस तरह अलग है ? दलित साहित्य के सौन्दर्यशास्त्र की विशेषताओं को प्रस्तुत किया गया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं।

द्वितीय अध्याय में हिन्दी दलित कहानियों में नारी–संवेदना को चित्रित करने का उपक्रम है। इस अध्याय में सन् 1980 से लेकर सन् 2008 तक की दलित कहानियों का विवेचन आलोच्य विषय के परिपेक्ष्य में हुआ है। इन कहानियों में 'अम्मा' (ओमप्रकाश वाल्मीकि), 'बदबू', 'साजिश' (सूरजपाल चौहान), 'सिलिया' (सुशीला टाकभौरे), 'सुमंगली' (कावेरी), 'जंगल की रानी' (ओमप्रकाश वाल्मीकि), 'हम कौन हैं' 'सुनीता' (रजत रानी 'मीनू'), 'मंगली' (कुसुम मेघवाल), 'अन्तिम बयान' (कुसुम वियोगी), 'दर्द' (मोहनदास नैमिशराय), 'मरीधार' (विजय कान्त), 'पहली रात का अंत' (उमेश कुमार सिंह), 'लाठी' (जय प्रकाश कर्दम), 'फुलवा' (रत्न कुमार सांभरिया), 'क्रान्ति' (राज वाल्मीकि), 'नई धार' (अनिता भारती), 'कर्फ्यू' (अखिलेश कुमार), 'खटिया की जाति' (सुरेन्द्र नायक), 'हिरजन' (प्रेम कपाडिया), 'उपमहाद्वीप' (अजय नावरिया), 'बंदरिया' (लखनलाल पाल), 'अब का समय' (प्रहलाद चन्द्र दास), 'यूज एण्ड थ्रो' (डॉ.पूरन सिंह), 'लोकतंत्र में बकरी' (उषा चन्द्रा), 'रात' (शिव कुमार कश्यप), 'जोजना' (दीपक कुमार 'अज्ञात'), 'आतंक' (राजेश कुमार बौद्ध) आदि के साथ कुल 62 कहानियों को लिया गया है। इसी अध्याय में इन कहानियों के परिप्रेक्ष्य में दलित शिक्षित महिलाएँ, दलित अशिक्षित महिलाएँ, दलित कामकाजी महिलाओं का शोषण, पारिवारिक शोषण का शिकार हुई महिलाएँ, आर्थिक स्वतंत्रता की चाह, परिवार में पति की भूमिका, परिवार में पिता की भूमिका, दलित नारी का विद्रोह, इस तरह आठ उपविभागों में विभक्त करके दलित नारी की संवेदनाओं को प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय में गुजराती दलित कहानियों में नारी संवेदना को प्रस्तुत किया गया है। हिन्दी की तरह इस अध्याय में भी सन् 1980 से लेकर सन् 2008 तक की गुजराती की दलित कहानियों का विवेचन आलोच्य विषय के परिप्रेक्ष्य में हुआ है। इन कहानियों में 'दायण' (हरीश मंगलम्), 'गंगामां' (दलपत चौहान), 'मंकोडा', 'मेना', 'जोगन', 'जेल की रोटी', 'राती रायण की रताश', 'शहर की बहू' (बी.केशरशिवम्), 'सांकडा', भूल किसी की भोगे कोई', 'शैली का व्रत', (विट्ठलराय श्रीमाली), 'होड' (अरविन्द वेगडा), 'नरक', 'जलनवह', (धरमभाई श्रीमाली), 'लाखु' (मधुकान्त कल्पित), 'थडी', (मोहन परमार), 'सोमली' (हरिपार), 'नवी' (योगेश जोशी), 'सपायडो' (विट्ठलराय श्रीमाली), 'मेली मथरावटी' (राघवणी माधड), 'वंटोड' (भी.न.वणकर), 'छगना को न समझ में आते सवाल' (जोसेफ मेकवान), 'गाठाण' (प्रवीण गढवी), 'मुंझारो' (दलपत चौहान), 'रोकड़ी' (चन्द्रा बहन श्रीमाली), आदि लगभग 64 कहानियों का अध्ययन किया गया है। इसी अध्याय में इन कहानियों के परिप्रेक्ष्य में दलित स्त्री का जातीय शोषण, सवर्णों की स्वार्थपरता का शिकार दलित महिलाएँ, परंपरा के प्रति विद्रोह, शोषण के प्रति दलित स्त्री का विद्रोह, दलित महिलाओं का पारिवारिक शोषण, दलित महिलाओं की आर्थिक समस्याएँ, इस तरह छः उपविभागों में दलित महिलाओं की संवेदनाओं को प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में हिन्दी और गुजराती दलित कहानियों में नारी संवेदना का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस अध्याय में हिन्दी और गुजराती की दलित कहानियों की समस्याओं की साम्यता और विषमता को विश्लेषित किया गया है। अध्याय के प्रारंभ में जातीय शोषण संबंधित समस्याओं एवं कारणों पर प्रकाश डाला गया है। दलित महिलाओं की आर्थिक समस्याएँ, दलितों की जातिगत हीन भावना की समस्याओं को भी विश्लेषित किया गया है। इस अध्याय में हिन्दी और गुजराती की दलित कहानियों के परिवेश को भी प्रस्तुत किया गया है।

इस अध्ययन के दौरान दलित नारी के विभिन्न रुपों और मुद्राओं से गुजरने का अवसर मिला। जहाँ एक तरफ नारी का शोषित, दमित, पीड़ित रुप मिला, वहाँ इन सबके बावजूद कुछ ऐसी तेज–तर्रार, जुझारु, विद्रोही, आत्मविश्वासी, स्वाभिमानी, परिश्रमी, और संघर्ष–दीप्त नारियाँ भी मिली जिनकी विपरीत परिस्थिति में संघर्ष की जितनी प्रशंसा की जाय कम है। पंचम अध्याय में ऐसी कुछ नारियों को अलगाने और विश्लेषित करने का यत्न हुआ है। क्रांति (क्रांति), सिलिया (सिलिया), मंगली (मंगली), सुनीता (सुनीता), शान्ता (साजिश), अंगूरी (अंगूरी), सुकिया (जोजना), अम्मा (अम्मा), चन्द्रो (सनातनी), रम्पो (रम्पो का चेहरा), रेवी (थडी), सोमली (सोमली), सीमा (राजीनामा), बेनीमां (दायण), शैली (शैली का व्रत) आदि ऐसे नारी चरित्र हैं जो अपने विशिष्ट गुणों से पाठकों को मुग्ध कर सकते हैं। उन पर अपनी अमिट छाप छोड़ जाते हैं। उनकी बुद्धि–प्रतिभा, संघर्ष क्षमता तथा अदम्य साहस उन्हें और नारी–पात्रों की भीड़ से अलगाते हैं।

अंतिम अध्याय 'उपसंहार' का है, जिसके अंतर्गत समग्र प्रबंध का समग्रावलोकन देते हुए उसके कतिपय निष्कर्षों को रेखांकित किया गया है। यहाँ पर अति संक्षेप में प्रस्तुत शोध की उपादेयता और उपलब्धियों को समेकित करते हुए उसकी भविष्यत् संभावनाओं के कुछ बिन्दुओं को उकेरा गया है। यथासंभव अध्याय के अंत में निष्कर्षों को दिया गया है। शोध–प्रबंध के अंत में संदर्भिका (Biblography) के अंतर्गत विभिन्न परिशिष्टों के तहत सहायक ग्रंथों तथा पत्र–पत्रिकाओं की सूची अकारादि कम से प्रस्तुत हैं।

प्रस्तुत शोध–कार्य के माध्यम से हिन्दी और गुजराती दलित कहानियों में नारी की संवेदना, समस्या, दशा, संघर्ष स्थितिओं के प्रश्न उजागर करने के लिए मैंने अपनी संपूर्ण क्षमता, शक्ति–मति, बुद्धि–प्रतिभा से प्रयत्न किया है। अपनी मर्यादाओं का अहसास मुझे है, अतः विद्वज्जनों के सम्मुख अपनी क्षतियों के लिए पहले ही नतमस्तक हूँ। यदि मेरे इस शोध–कार्य से हिन्दी एवं गुजराती दलित कहानियों की आलोचना के कुछ नये आयाम खुलते हैं और अध्येता तथा अनुसंधित्सु इससे किंचित्मात्र भी लाभान्वित होते हैं, तो मैं अपने इस परिश्रम को सार्थक समझूंगी। इस शोध निबंध के प्रबंधन में प्रत्यक्ष व परोक्ष रुप से जिन विद्वानों के बहूमूल्य ग्रंथों व लेखों से मैंने लाभ उठाया है, उन सबके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

मेरे इस शोध प्रबंध के कार्य में शुरु से अंत तक मुझे हर समय सहयोग देने वाले डॉ. कान्ति मालसतर जी के प्रति मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, क्योंकि उनके समुचित मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन के बिना यह महापर्व पार करना मेरे लिए दुष्कर

होता। डॉ. भरत मेहता जी ने मुझे शोध–प्रबंध का विषय चयन करने में अपना महत्त्वपूर्ण सहयोग एवं मार्गदर्शन दिया, जिसके लिए मैं उनका आभार व्यक्त करती हूँ।
अदरणीय फारुक शाह जी ने विविध पुस्तकों की प्राप्ति के हेतु मुझे आवश्यक जानकारियाँ देने में अपना विशेष सहयोग दिया, जिसके लिए मैं उनका भी आभार व्यक्त करती हूँ। हिन्दी विभाग की अध्यक्षा आदरणीय डॉ.शैलजा भारद्वाज का भी मैं हृदय से आभार मानती हूँ। हिन्दी विभाग के सभी अध्यापकों के सहयोग के लिए भी मैं आभार व्यक्त करती हूँ। इस पूरी प्रकिया में मेरे पति, मित्र, एवं परिवार के सभी सदस्य सदैव मुझे हौंसला देते रहे। उनकी कृपा तथा स्नेह का ही यह परिपाक है।

अंत में मेरे निर्देशक डॉ. मुहम्मद अज़हर ढेरीवाला जी को मैं अपने शतशः प्रणाम निवेदित करती हूँ, क्योंकि उनके बहुमूल्य मार्गदर्शन के अभाव में यह पहाड़–सा कार्य कभी सम्पन्न न होता। उनके निर्देशन में पी–एच.डी. का शोध–प्रबंध प्रस्तुत करने वाली मैं पहली अनुसंधित्सु हूँ, उन्होंने मुझ पर जो विश्वास के साथ मुझे यह अवसर प्रदान किया है, उसके लिए भी मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। डॉ. साहब की ज्ञान निष्ठा, उदारता स्नेहसिक्तता, लक्ष्य–प्रति श्रुतता तथा शोध–अनुसंधान के क्षेत्र में उनकी पकड़ विद्वानों में विश्रुत है। अतः उनके ऋण से मैं कभी उऋण नहीं हो सकती।

दिनांक– 24-05-2013

विनीत,

(पारुल एल. सिंह)